हिन्दी आलोचना (हजारी प्रसाद द्विवेदी)

मानव समुदाय की गरिमा के ऊँचे शीर्ष तक पहुँचाने वाले डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के अद्वितीय विधाता हैं। इनकी आलोचना के केन्द्र में मानव हित एवं मानवतावाद है।

आलोचनात्मक काव्य कृतियों में डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी की विशेषता निम्न बिन्दुओं के माध्यम से देख सकते हैं

1. आधुनिकता को पूर्ण एवं नई दृष्टि
2. मानवतावाद का महत्व
3. साहित्यकार का लक्ष्य
4. अतीत की विशेषता का वर्णन
5. कला जीवन के लिए
6. वैज्ञानिक प्रवृत्ति
7. आनुभूतिपूर्ण दृष्टि
8. साम्प्रदायिक स्थिति में व्यक्तिवाद —

निष्कर्ष —

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचनात्मक कृति निम्न हैं — 1. सिद्ध साहित्य
2. नाथ साहित्य
3. संत साहित्य
4. कबीर इत्यादि

उपसंहार

इन काव्य कृतियों में समीक्षक की नई दृष्टि प्रस्तुत की गई है साथ ही आलोचना के उद्देश्य एवं लक्ष्य में मनुष्य के हित को महत्व दिया गया है। निष्कर्ष: द्विवेदी जी समाज के व्यक्तित्व को महत्व दिये हैं।